11

हृदय की समस्या वाली कलीसिया

(2:1-7)

मैं इफिसुस की कलीसिया की सभा में होने की कल्पना करता हूं। सुनने में आया है कि आपके प्रिय भाई यूहन्ना का पत्र आया है और कलीसिया यह सुनने के लिए इकट्ठी हुई है कि उस पत्र में क्या लिखा है।[1] संदेश लाने वाले के खड़ा होने पर आप आगे को झुक जाते हैं।

अभिवादन (2:1क)

पत्र के आर भक शब्द हैं, ''इफिसुस की कलीसिया के दूत [स्वर्गदूत][2] को यह लिख'' (आयत 1क)। इस मण्डली को पहले स बोधित शायद इसलिए किया गया, क्योंकि इफिसुस ''सात नगरों में सबसे महत्वपूर्ण था।''[3] इसे ''एशिया का मुकुट'' कहा जाता था। यह संसार के उस भाग के व्यापार का केन्द्र था और प्राचीन जगत के सात अजूबों में से एक, डायना का मन्दिर यहां होने के कारण की यह नगर प्रसिद्ध था। यह नगर भव्य, स य और समृद्ध था।[4] मेरा ध्यान 1989 के पतझड़ की ओर जाता है, जब मेरी पत्नी जो और मैं प्राचीन इफिसुस की संगमरमर की गलियों में घूमते हुए इसके विशाल एि फथियेटर में खड़े थे।[5] तुर्की में जितने भी प्राचीन स्थान मैंने देखे, उन सब में से इफिसुस के खण्डहरों जितना विशाल और प्रभावित करने वाला कोई और नहीं था।[6]

इफिसुस सुसमाचार के फैलने के स बन्ध में भी विशेष महत्व रखता था। पौलुस ने वहां परिश्रम करते हुए लगभग तीन वर्ष बिताए थे (प्रेरितों 19:1-22; 20:31)।[7] इस बीच, ''आसिया के रहने वाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया'' (प्रेरितों 19:10)। सात में से अधिकतर कलीसियाएं उसी समय स्थापित हुई होंगी। बाद में यरूशलेम को जाते हुए पौलुस इफिसुस के प्राचीनों से मिला और उसने उन्हें ''चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें'' करने वाले झूठे शिक्षकों से सावधान होने की चेतावनी दी (प्रेरितों 20:30)। रोम की जेल में पौलुस ने इफिसुस के नाम की कलीसिया को पत्र लिखा। छूटने के बाद उसने तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ दिया कि ''कितनों को

आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें'' (1 तीमुथियुस 1:3)। कुछ साल बाद प्रेरित यूहन्ना इफिसुस में रहने लगा। जो वहां अपने जीवन के बीस या तीस वर्ष तक रहा। इफिसुस पर ईश्वरीय प्रेम और परिश्रम काफ़ी उंडेला गया था।

यीशु का विवरण (2:1ख)

पढ़ने वाला आगे कहता है: ''जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि'' (आयत 1ख)। (दीवटों के बीच चलते हुए यीशु का दर्शन का चित्र देख)।

अध्याय 1 वाले दर्शन पर आधारित यह विवरण यीशु की दो बातों को दिखाता है, जो इफिसुस की कलीसिया को पता होनी चाहिए थीं।

उसकी सामर्थ और सुरक्षा

पहले तो इसमें ज़ोर दिया गया कि अपनी शक्ति के लिए वे यीशु पर निर्भर हैं। डोमिशियन ने हाथ में नक्षत्र पकड़े हुए अपने पुत्र के नाम का एक सिक्का जारी किया था, जो इस बात का संकेत था कि संसार का भविष्य उसके हाथ में है। यीशु इफिसुस के लोगों को बताना चाहता था कि तारे *उसके* हाथ में थे, न कि डोमिशियन या उसके वारिसों के हाथ में। मसीह का नियन्त्रण सब बातों पर है।

2:1 में अनुवादित शब्द ''लिए हुए'' 1:16 में इस्तेमाल किए गए शब्द से मज़बूत है; इस से ''*मज़बूत* पकड़ का संकेत'' मिलता है।[8] यीशु ने कलीसियाओं को[9] मज़बूती से अपने हाथ में पकड़ा था। यीशु की *सामर्थ* और *सुरक्षा* पर बल दिया जा रहा था। मण्डलियों और मसीही लोगों के लिए आज भी हम यीशु की सामर्थ पर निर्भर हैं।

उसकी उपस्थिति और बोध

दूसरा, यीशु के इस विवरण ने इफिसियों को याद दिलाया कि वे अपने कामों के लिए यीशु के प्रति जवाबदेह हैं। अध्याय 1 वाले दर्शन में यूहन्ना ने यीशु को ''दीवटों के बीच में'' *खड़े* देखा था (1:13); इस बार उसे दीवटों में *चलते* हुए दिखाया गया था। चलते हुए वह कलीसियाओं का निरीक्षण करते हुए उनकी शक्तियों को देखकर उनकी कमज़ोरियों का पता लगा रहा था और उनकी आत्मिक स्थिति का निदान कर रहा था। यहां यीशु की *उपस्थिति* तथा बोध पर बल दिया जा रहा था।

क्या यीशु आज भी अपनी कलीसियाओं में चलता है? हां वह चलता है। क्या आज भी वह शक्तियों और निर्बलताओं पर ध्यान देते हुए जांचने के लिए घूमता है? हां। जब यीशु उस मण्डली में आता है, जहां आप और मैं आराधना करते हैं तो वह क्या देखता है? इससे भी बढ़कर, जब यीशु आपके और मेरे हृदय को जांचता है तो वह क्या पाता है? उसे क्या मिलेगा, जिससे वह प्रसन्न हो जाए? उसे क्या मिलता है, जिससे वह उदास हो जाता है?

कलीसिया की जांच के लिए स्वर्ग से अधिकृत केवल यीशु ही है। केवल उसके पास ही सही काम करने का अधिकार,[10] ज़ि मेदारी और संसाधन हैं।[11] प्रभु हम से अपनी गलती पता लगाकर सुधारने की उ मीद करता है (2:2, 6), परन्तु कलीसिया के भाइचारे में अपने आप को जांचने वाले बनाने के प्रलोभन का सामना करना आवश्यक है। हम में से अधिकतर के हाथों में अपनी ही कमियां और मण्डलियों की आवश्यकताएं हैं, जहां हम काम और आराधना करते हैं।

सराहना (2:2, 3, 6)

पढ़ने वाला आगे इफिसियों की कलीसिया की सराहना करता है। सराहना का आर भ पिछले पाठ के वाक्यांश ''मैं तेरे[12] काम, ... जानता हूं''[13] (आयत 2क) से होता है। अनुवाद हुए शब्द ''जानता हूं'' का अर्थ ''पूरी जानकारी होना, अच्छी तरह जानना'' है।[14] CEV में इस वाक्यांश का अनुवाद ''तूने जो किया है मुझे सब मालूम है'' है। इफिसुस के मसीहियों को यह समझने की आवश्यकता थी कि ''जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रकट हैं'' (इब्रानियों 4:13)। हमें भी यह समझ होनी आवश्यक है।

यीशु ने इफिसुस की कलीसिया की सकारात्मक विशेषताओं से आर भ किया। किसी मण्डली या व्यक्ति से बात करते समय हमें चाहिए कि व्यक्तिगत गुणों पर ध्यान लगाकर आर भ करें, जिनकी सचमुच सराहना की जा सकती हो।

सेवा और स्थिरता

यीशु ने पहले तो कलीसिया की उसकी सेवकाई और स्थिरता के लिए सराहना की: ''मैं तेरे काम, और तेरे परिश्रम और तेरे धीरज को जानता हूं''[15] (आयत 2क)। अनुवाद हुए शब्द ''परिश्रम'' का अर्थ ''थका देने वाला परिश्रम'' है।[16] काम करते समय वे जेबों में हाथ डालकर खड़े नहीं होते थे। इसके बजाय वे मांसपेशियों के दुखने और कपड़े पसीने से तर होने तक परिश्रम करने की तरह प्रयास करते थे।

इसके अलावा काम कठिन होने पर उन्होंने छोड़ा नहीं था। आयत 3 में यीशु ने जोड़ा, ''तू धीरज धरता है, मेरे नाम के लिए दुख उठाते-उठाते थका नहीं।'' ''दुख उठाते-उठाते थका नहीं'' वाक्यांश उसी यूनानी शब्द से है, जिससे आयत 2 वाला ''परिश्रम'' शब्द है। जैसे किसी ने कहा है, ''वे अपने परिश्रम से थके बिना चूर-चूर होने तक परिश्रम करते थे।'' हम सब में यह गुण होना चाहिए! (देखें गलातियों 6:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:13.)

उदाहरण के रूप में मानवीय देह का इस्तेमाल करते हुए हम कह सकते हैं कि इफिसुस की कलीसिया का *दाहिना हाथ सेवा के लिए मज़बूत* था।

दृढ़ता और अलगाव

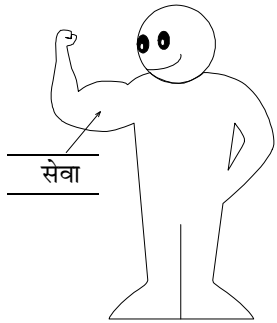

फिर यीशु ने उनकी दृढ़ता[17] और अलगाव के लिए उनकी सराहना की: ''और ... तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता; और जो अपने आपको प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया'' (आयत 2ख, ग)। ''सकता'' शब्द का इस्तेमाल NASB 2 और 3 आयतों में दोनों जगह ''endured'' हुआ है:[18] उन्होंने थकाने वाले परिश्रम को तो सहार लिया, परन्तु झूठी शिक्षाओं को सहारने से इनकार कर दिया।

पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को चेतावनी दी थी कि ''मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे'' (प्रेरितों 20:29)। उन में से कुछ ''भेड़ों के भेष में भेड़िए'' अपने आप को ''प्रेरित'' कहलाते थे (देखें 2 कुरिन्थियों 11:13)। उन्होंने पहले अच्छा प्रभाव बनाया होगा, प्रभावशाली रहे होंगे और आम लोगों की सोच को बदल दिया होगा। परन्तु इफिसियों की कलीसिया को पहले से चेतावनी दी गई थी। पौलुस की चेतावनी के अलावा, यूहन्ना ने लिखा था, ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को *परखो,* कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। इफिसियों ने नई शिक्षा को परमेश्वर के वचन से तुलना करके परखा होगा (प्रेरितों 17:11)। उन्होंने अपने आप बने ''प्रेरितों'' को वास्तविक ''प्रेरित के लक्षण [आश्चर्यकर्म]'' दिखाने के लिए कहा होगा (2 कुरिन्थियों 12:12)।[19]

इफिसियों को झूठे शिक्षकों की शिक्षा की ही चिंता नहीं थी; इसके अलावा उन्हें उन शिक्षकों के प्रभाव की भी चिंता थी। आयत 6 में यीशु ने जोड़ा, ''तुझ में यह बात तो है, कि तू नीकुलइयों के *कामों* से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूं।'' नीकुलई झूठी शिक्षा देने वाले लोग थे, जिनके जीवन अभक्तिपूर्ण थे और वे दूसरों को भी अपने जैसे बनने के लिए कहते थे। पिरगमुन के नाम पत्र में यीशु ने नीकुलइयों की शिक्षा को ''बिलाम की शिक्षा'' से जोड़ा, जो इस्राएलियों को प्रोत्साहित करते थे कि ''वे मूर्तों के बलिदान खाएं, और व्यभिचार करें'' (2:14, 15)।[20] हिपोलिटुस ने नीकुलइयों को आरंभिक नॉस्टिकों अर्थात अध्यात्म-ज्ञानियों का समूह बताया,[21] जो अनैतिक जीवन बिताते थे।[22] अपनी अभक्तिपूर्ण शिक्षा को तर्कसंगत दिखाने के लिए नीकुलइयों का दावा था कि उन्हें आरंभिक कलीसिया के ''डीकन''[23] निकुलाउस ने सिखाया था (प्रेरितों 6:5)।[24]

''घृणा'' शब्द पर ध्यान दें: यीशु ने कहा, ''तू नीकुलइयों के कामों से *घृणा* करता है, जिनसे मैं भी *घृणा* करता हूं।'' परमेश्वर बुराई से घृणा करता है (नीतिवचन 6:16-19) और हम से भी बुराई से घृणा करने की उमीद करता है (रोमियों 12:9)। परन्तु इस बात को समझें कि इफिसी नीकुलइयों से घृणा नहीं करते थे, बल्कि वे उनके *कामों* से घृणा

करते थे। वे उनके व्यवहार से घृणा करते थे, परन्तु लोगों से प्रेम करते थे। हम में से हर किसी को पाप से घृणा करना, परन्तु पापियों से प्रेम करना चाहिए। चिकित्सक के लिए रोगी के शरीर को नष्ट करने वाले कैंसर से घृणा करनी होती थी परन्तु रोगी के प्रति उसके मन में करुणा होनी आवश्यक है।

''देख नहीं सकता'' वाक्यांश स भवतया यह संकेत देता है कि इफिसुस वासी अपने बीच में झूठी शिक्षा को रहने नहीं देते थे। वे उनकी बुराई को सामने लाकर उनसे संगति तोड़ लेते थे (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:6; 1 कुरिन्थियों 5:6-11; मत्ती 18:17)। होमेर हेली ने उनके व्यवहार को इन शब्दों में व्यक्त किया है: ''यदि [नीकुलई] परिवर्तित नहीं होंगे तो उन्हें हटा दो।''[25]

AB में इसका अनुवाद ''सह नहीं सकता'' हुआ है। संसार के कई भागों में आज ऐसे कथन को ''राजनैतिक रूप से गलत'' माना जाएगा। सहनशीलता को बढ़ावा दिया जाता है और असहनशीलता की निंदा की जाती है; परन्तु यीशु ने असहनशील होने के लिए एक कलीसिया की सराहना की, विशेषकर पाप को न सहने के लिए। हम पाप के विरुद्ध ''मरने तक'' जंग कर रहे हैं (इफिसियों 6:11; प्रकाशितवाक्य 12:17); हम समझौता नहीं कर सकते।

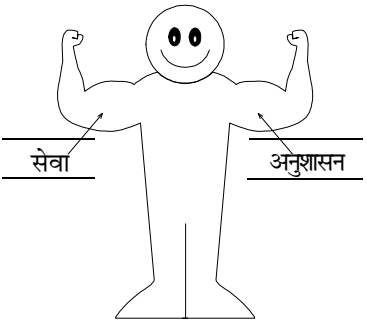

मानवीय देह का इस्तेमाल करते हुए अपने उदाहरण को जारी रखते हुए, हम कह सकते हैं कि इफिसुस की कलीसिया *अनुशासन की कड़ी बाईं भुजा* थी।

हम में से अधिकतर लोग अभी-अभी बताई गई विशेषताओं वाली कलीसिया में होकर प्रसन्न होंगे? परन्तु जांच रिपोर्ट अभी पूरी नहीं हुई थी।

ताड़ना (2:4)

अब तक जो इफिसुस की हमारी काल्पनिक सभा में थे, चेहरों पर मुस्कान लिए इधर-उधर देख रहे और एक दूसरे की ओर सिर हिला रहे हैं। शायद कुछ यह सोच रहे हैं, ''हम यह बात इतनी अच्छी तरह नहीं कह सकते थे!'' तौ भी पढ़ने वाले के चेहरे से इन वचनों को पढ़ते समय मुस्कान उड़ जाती है: ''पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है'' (आयत 4क)। उसके द्वारा प्रभु को यह पता चलने पर कि ''तू ने अपना पहिला सा प्रेम[26] छोड़ दिया है''[27] (आयत 4ख) खामोशी

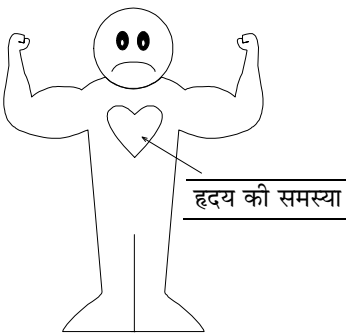

छा जाती है।

इन मसीही लोगों की सेवा की मज़बूत दाहिनी भुजा और अनुशासन की मज़बूत बाईं भुजा थी, परन्तु उनके *हृदय की समस्या* थी।[28]

आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो दिखने में तो पूरी तरह से स्वस्थ लगता हो, परन्तु अचानक उसकी मृत्यु हो गई? मैं अपने ससुर के बारे में सोच रहा हूं, जो कठिन परिश्रम करने वाला ग्वाला था और जिन्हें लगता था कि उन्हें कब्ज़ की मामूली सी समस्या है, परन्तु पचपन वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु ज़बर्दस्त हार्टअटैक से हुई। आत्मिक रूप में इफिसुस की कलीसिया दिखने में स्वस्थ थी। यह प्रभु के लिए काम करती थी और शिक्षा में मज़बूत, परन्तु इसमें एक बड़ी कमी थी: हृदय रोग की समस्या।

टीकाकार इस बात से असहमत हैं कि यीशु ने परमेश्वर के लिए प्रेम की बात की या मनुष्य जाति के लिए प्रेम की बात।[29] इस प्रश्न का महत्व नहीं है, क्योंकि सच्चा प्रेम दोनों में है (1 यूहन्ना 4:20)। यीशु की बात में महत्व ''पहले'' शब्द का है: ''तू ने अपना *पहला* सा प्रेम छोड़ दिया है।''[30] फिलिप्स के अनुवाद में इस प्रकार है, ''तू अब वैसे प्रेम नहीं करता, जैसे *पहले* करता था।''[31]

''पहले प्रेम'' शब्द को समझने के लिए एक नवविवाहित द पत्ति पर विचार करें, आप उनके पहले प्रेम को कैसे दर्शाएंगे? ''जोशीला,'' ''उत्तेजक,'' ''अत्यधिक,'' जैसे शब्द ध्यान में आ सकते हैं। इसे आत्मिक अर्थ में लेते हुए वापस उस समय में चले जाएं, जब आप पहले पहल मसीही बने थे। क्या आपको याद है कि बपतिस्मा लेने पर आप कैसे अनान्दित हुए थे? क्या आपको याद है कि आराधना सेवा में भाग लेने पर आप कितने आनन्दित होते थे? क्या आपको याद है कि आप दूसरों की सहायता करने के अवसर पाकर कितने प्रसन्न होते थे? क्या आपको याद है कि आप अपने विश्वास को दूसरों को बताने में कितना आनन्दित होते थे? उस समय के अपने पहले प्रेम को आप कैसे वर्णित कर सकते हैं? शायद ''जोशीला,'' ''उत्तेजक,'' और ''अत्यधिक'' जैसे शब्द यहां भी लागू होते हैं।

विवाह में या परमेश्वर के साथ हमारे स बन्ध में प्रेम अपने आप ही जोशीला और घनिष्ठ हो जाता है? आप जानते हैं कि ऐसा नहीं होता। आपने देखा है कि विवाह में क्या होता है: एक द पत्ति प्रेम की अगन के साथ अपना जीवन आर भ करता है। फिर समय बीतने पर वह ज्वाला यदि बुझती नहीं तो कम अवश्य होती रहती है। वह द पत्ति वैसे ही बना रह सकता है: स्त्री अच्छी पत्नी बनने का प्रयास करती है और पुरुष अपने परिवार का प्रबन्ध करता है, परन्तु वह चिंगारी नहीं है। वे केवल ''कर्त्तव्य पूरा करते हुए चलते'' हैं अर्थात उनका विवाह एक दिनचर्या बन चुका है।

हम भी अपने आत्मिक जीवनों में जोश और घनिष्ठता को खो सकते हैं। एक प्रात: उठकर हम यह सोच सकते हैं कि प्रभु के लिए हमारी सेवा एक आदत बन गई है, हमारे मन इसमें नहीं हैं, हम तो प्रेम से नहीं, बल्कि कर्त्तव्य पूरा करने के लिए उसकी आज्ञा मानते हैं।

कोई आपत्ति कर सकता है, ''परन्तु विवाह में हो या मसीही जीवन में, पहले प्रेम की उत्तेजना बने रहने की उ मीद करना अव्यावहारिक है। समय हमारे प्रेम को कम कर देता है। ऐसा तो होना ही था, सो इसकी चिंता छोड़ दो।'' क्या यीशु को इसकी चिंता थी ? उसने कहा, ''*पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना* कि तू ने अपना पहला सा प्रेम तोड़ दिया है'' (आयत 4)। यदि यीशु को इसकी चिंता थी तो हमें भी चिंता होनी चाहिए।

प्रभु की चिंता का कारण अगली आयत में मिलता है।

चेतावनी और धमकी (2:5)

हमारी काल्पनिक मण्डली में लोगों के चेहरे पढ़ने वाले द्वारा यीशु की चेतावनी देने पर सब ग भीर हो जाते हैं: ''सो चेत कर, कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा'' (आयत 5)। दीवट यहां मण्डली को ही कहा गया है (1:20)। यीशु द्वारा दीवट को हटाने के संकेत का अर्थ यह होगा कि मण्डली का अस्तित्व मिट सकता है।[32] आप बिजली के . यूज हुए बल्ब का क्या करते हैं ? इसे फैंक दिया जाता है। प्रेम की ज्वाला रहित दीवट का क्या होता है ? इसे भी फैंक दिया जाता है। रिचर्ड रोजर्स ने इफिसियों के विकल्प को ''पुनर्जागरण या हटाया जाना''[33] शब्दों में संक्षिप्त किया है!

इस पर कभी संदेह न करें: हृदय की ग भीर स्थिति को बिना इलाज किए छोड़ना मृत्यु को बुलावा है! मानवीय शरीर में यह बात सत्य है। विवाह में यह बात सत्य है। मण्डली में यह बात सत्य है। ऐसे ही हमारे अपने प्राणों में भी यह बात सत्य है।

यीशु ने इफिसियों को अपना पूर्वाभास ही नहीं बताया, बल्कि अपनी सिफारिश भी दे दी। हृदय की समस्या के लिए उसका उपचार तीन तरफा था (और है)।[34]

याद कर[35]

पहले तो *याद* करने का इस्तेमाल होना आवश्यक है: ''चेत[36] कर कि तू कहां से गिरा है'' (आयत 5क)। किसी विवाहित द पत्ति को परामर्श देते हुए मैं उन्हें अपने स बन्ध के आर भिक दिनों को याद करने के लिए कहता हूं: पहली बार जब उन्होंने एक-दूसरे को देखा था, पहली डेट, पहला चु बन, पहली बार विवाह की पेशकश आदि। मैं दोनों से बारी-बारी पूछता हूं, ''तु हें कैसा *लगा* था ?'' अपने स बन्ध को बहाल करने के लिए उन्हें *याद करना* आवश्यक है कि पहली बार मिलने पर, उन्होंने एक-दूसरे से विवाह करना क्यों चाहा था, वे एक-दूसरे से कितना प्रेम करते थे। उन्हें यह अहसास होना आवश्यक है कि अपने पहले प्रेम को फिर से पाने के लिए उन्हें क्या करना आवश्यक है।

इसी प्रकार, जब कोई आत्मिक रूप से अपने पहले प्रेम को छोड़ देता है तो उसे एक मसीही के रूप में अपने आर भिक दिनों को याद करना आवश्यक है। उसे उन दिनों की उत्तेजना और रोमांच याद करना आवश्यक है। इसके अलावा उसे याद करना आवश्यक है

कि उसे पाप से बचाने के समय *प्रभु ने उसके लिए क्या किया।* प्रचारक बनने से पूर्व जॉन न्यूटन का जीवन बड़ा पाप भरा था जिसे एक गुलाम के रूप में समुद्रों में घुमाया जाता। अपने मन परिवर्तन के बाद उसने बड़े अक्षरों में एक आयत लिखकर अपने चोगे पर लगा दी: ''स्मरण र ाना कि तू ी मिस्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया; ...'' (व्यवस्थाविवरण 15:15)।

मन फिरा

फिर *इच्छा* होनी आवश्यक है: ''... और मन फिरा''[37] (आयत 5क)। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम इस आज्ञा से चूकें नहीं, प्रभु ने आयत के अन्त में इसे फिर से दोहराया: ''यदि तू मन न फिराएगा तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा'' (आयत 5घ)। मन फिराव ''विचार पर [आधारित] मन को बदलना'' है।[38] जो कुछ हम ने खोया है, उस पर विचार करते हुए हमें अपनी आवश्यकता को मानकर निर्णय बदलना आवश्यक होता है।

वैवाहिक समस्याओं वाले द पत्तियों को परामर्श देते हुए मैं इस बात पर बल देता हूं कि विवाह की उनकी शर्त उनकी उस योजना से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, जो वे बना रहे हैं। यदि वे सचमुच प्रेम की चिंगारी को फिर से जलाना *चाहते* हैं तो ऐसा होगा ही; यदि वे नहीं चाहते तो ऐसा कुछ नहीं होगा कि किसी के करने या कहने से बदल जाए।

सच्चा मन फिराव विचार पर आधारित है और इसका परिणाम निर्णय लेना है, इस मामले में अपने पहले प्रेम को फिर से पकड़ने के लिए परमेश्वर की सहायता से वह सब करने का निर्णय है जो आप कर सकते हैं।

फिर कर[39]

अन्त में, *सामर्थ* और *योग्यताएं* भी शामिल होनी चाहिए: ''... और पहले के समान काम कर'' (आयत 5ग)। पहले तो यह निर्देश अजीब लग सकता है। आखिर यीशु ने उनकी सराहना की थी, क्योंकि उन्होंने उसके लिए परिश्रम करना नहीं छोड़ा था (2:2, 3)। तो फिर उसने उन्हें ''पहले के समान काम'' करने के लिए क्यों कहा? एक बार फिर, मु य शब्द ''पहले'' है: ''और *पहले* के समान काम कर।'' वे अभी भी काम कर रहे थे, परन्तु वे वह काम नहीं कर रहे थे, जो पहले मन परिवर्तन करने के समय करते थे।

इफिसुस की कलीसिया द्वारा किए जाने वाले काम उनके ''पहले कामों'' से अलग कैसे थे? शायद नवविवाहित द पत्ति का हमारा उदाहरण उस प्रश्न का उत्तर देने में सहायक हो सकता है: अपने प्रेम को व्यक्त करने के उनके ढंगों पर विचार करें: एक-दूसरे के कानों में बड़े प्यार से कही उनकी बातें; ''आई लव यू'' कहने के लिए फोन से चिपके रहना; गले लगना, थपकी, चु बन; छोटे-मोटे उपहार, और लगाव की बातें।[40] अफसोस कि हम में से अधिकतर लोगों द्वारा वर्षों बाद इन बातों को छोड़ दिया गया और जिसका नतीजा हमारे

परिवारों में गड़बड़ी है।

आइए हम प्रभु के साथ अपने स बन्ध में इस बात को लागू करते हैं: जब हम पहले पहल मसीही बने थे और आप में अत्यधिक जोश था, तो हम तब *क्या* करते थे, जो आज के हमारे काम से अलग था? शायद हम आनन्द से आराधना में सबसे पहले पहुंच जाते थे। शायद हम दूसरे मसीही लोगों के घर हर स भव तरीके से जाने का प्रयास करते थे। शायद हम हर मिलने वाले को बताते थे कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है। शायद हम सहायता और सेवा करने की किसी भी चुनौती को स्वीकार करने का अवसर ढूंढ़ते थे। अब वह समय नहीं रहा, वे ''पहले काम'' केवल एक यादगार बन गए हो सकते हैं और हमारे मसीही जीवन को आघात लगा हो सकता है।

अपने पहले प्रेम को पाने के लिए इफिसुस के मसीही लोगों के लिए पहले जैसे काम *करने* आवश्यक थे। प्रेम के काम करते हुए प्रेम का व्यवहार फिर जाग जाएगा। किसी ने कहा है, ''नये ढंग के अहसास में अपने आप को काम करवाना अपने आप को काम के नये ढंग में अहसास दिलाने से आसान है।'' विवाह में यही बात लागू होती है। अशांत परिवार वाले द पत्तियों को मैं एक बार फिर से वही करने के लिए कहूंगा, जो वे एक-दूसरे के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए आर भ में करते थे।[41] यदि वे ऐसा करने को तैयार हैं, तो प्रेम की चिंगारी फिर से सुलग सकती है। यीशु चाहता है कि हम जान जाएं कि यही सिद्धांत हमारे आत्मिक जीवनों में भी काम करेगा।

ताड़ना (2:7क)

पढ़ने वाले द्वारा पत्र में यहां पहुंचने पर, मैं कल्पना करता हूं कि सुनने वाले सिरों को हिलाते हुए सोच रहे हैं, ''हां, *भाई रूफस* को और प्रेम करने वाला होना चाहिए।'' यीशु ने पहले से ही ऐसे उत्तर का आभास कर लिया था: ''जिसके कान हों, वह सुन ले[42] कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (आयत 7क)। अन्य शब्दों में, वह कह रहा था, ''यह पत्र है तो मण्डली के नाम, पर वास्तव में मैं व्यक्तिगत रूप से तु हीं से बात कर रहा हूं। तुम में से हर एक इसे *व्यक्तिगत* रूप से ले।''

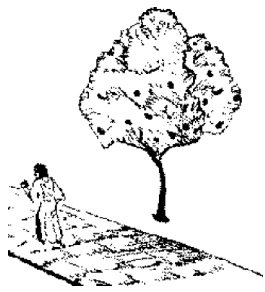

जीवन के वृक्ष से खाना (2:7)

प्रतिज्ञा (2:7ख)

पढ़ने वाला यीशु की एक ज़बर्दस्त प्रतिज्ञा के बाद पढ़ना बन्द करता है: ''जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा'' (आयत 7ख)। यीशु ने इफिसुस के मसीही लोगों को सावधान किया था कि यदि कुछ बदलाव नहीं होता, तो आत्मिक *मृत्यु* उनकी प्रतीक्षा कर रही है। यहां वह यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि यदि वे

उसकी चुनौती को मान लेते हैं तो आत्मिक *जीवन* उन्हीं का होगा। हज़ारों वर्ष पूर्व लोगों को पाप के कारण जीवन के वृक्ष से फल खाने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था (उत्पत्ति 3:24)। यीशु ने यहां संकेत दिया कि अब यह मनुष्य जाति को फिर से मिलने वाला है। प्रकाशितवाक्य का अन्तिम अध्याय परमेश्वर के स्वर्गलोक अर्थात स्वर्ग में जीवन के बढ़ते वृक्ष[43] की तस्वीर दिखाता है और उद्धार पाए हुए लोग इससे जीवनदायक फल का आनन्द ले रहे हैं (22:1, 2)!

यदि इफिसुस के लोग किसी दिन जीवन के वृक्ष में से खाना चाहते थे तो उन्हें प्रेम की ज्वाला को फिर से जलाना आवश्यक था। इस आयत में ''जय पाए'' शब्द ''विजय'' के लिए यूनानी शब्द के क्रिया रूप से लिया गया है।[44] ''इसका अर्थ उन परिस्थितियों पर काबू पाना है, जो किसी के सामने आती हैं।''[45] इस पत्र में यह इफिसुस के लोगों से अपने पहले प्रेम की शक्ति और जोश को फिर से पाने के लिए कहता है।

सारांश

एक बार फिर आइए इफिसुस की अपनी कल्पित मण्डली में वापस जाते हैं: पढ़ने वालों द्वारा उनके लिए पत्र पढ़ना समाप्त करने पर सुनने वालों की क्या प्रतिक्रिया होती है? ऐतिहासिक लेखों के अनुसार, इफिसुस की कलीसिया कई वर्ष तक आसिया के रोमी क्षेत्र में भलाई की एक बड़ी शक्ति बनी रही। मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि इसका अर्थ है कि मण्डली ने कम से कम एक बार यीशु की चेतावनी को ग भीरता से लिया।

इस पत्र के लिखे जाने के थोड़ी देर बाद, डोमिशियन की मृत्यु हो गई और यूहन्ना को निर्वासन से छोड़ दिया गया। आर भिक लेखकों के अनुसार अपनी मृत्यु शैय्या पर यूहन्ना ने भाइयों से एक-दूसरे से प्रेम रखने का आग्रह किया। शायद उन्होंने विरोध किया, ''पर हम चाहते हैं कि आप हमें कुछ नया बताएं।'' यूहन्ना अपने पहले पत्र से उद्धृत करके उत्तर दे सकता था, ''हे प्रियो, मैं तु हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आर भ से तु हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुमने सुना है। ... क्योंकि जो समाचार तुम ने आर भ से सुना, वह यह है, कि हम एक-दूसरे से प्रेम रखें'' (1 यूहन्ना 2:7; 3:11)।

इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र मुझे सबसे अधिक परेशान करने वाले पत्रों में से एक लगता है, यह मुझे प्रभु की सेवा करने के अपने उद्देश्यों को देखने के लिए विवश करता है। मेरा जीवन ऐसा क्यों है? क्या मैं परमेश्वर की सेवा इसलिए करता हूं, क्योंकि मैं इतने समय से करता आ रहा हूं और अब यह मेरी आदत बन चुकी है? क्या मैं आराधना इसलिए करता हूं कि यह मेरी ज़ि मेदारी है? क्या मैं दूसरों की सहायता इसलिए करता हूं कि लोग मेरी तारीफ करें? क्या मैं परमेश्वर की आज्ञाओं को इसलिए मानता हूं, क्योंकि मैं उससे और उसके उद्देश्य से प्रेम रखता हूं?

आत्मिक समस्या रोगी हृदय जैसी ही है, परन्तु कोई आत्मिक समस्या हमारे आत्मिक

स्वास्थ्य के लिए इतनी खतरनाक नहीं है। खराब हृदय की मर मत न हो, तो मृत्यु निश्चित है। इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र हम में से हर एक पर चिल्लाता है कि ग भीर हृदय परीक्षण के लिए सबसे बड़े चिकित्सक के पास जाओ![46]

क्या यह हो सकता है कि आपने अपना पहला प्रेम त्याग दिया हो? यदि त्याग दिया है तो इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, अपने हृदय में प्रेम की बुझती चिंगारी को फिर से जगाने का समय आज ही है![47]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

सात पत्रों पर प्रवचनों के लिए प्रचारकों ने कई शीर्षक ढूंढ़ लिए हैं। इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र पर पाठों के लिए शीर्षकों में ''पहला प्रेम,'' ''वफ़ादार परन्तु कम,'' एक बात को छोड़कर ''हनीमून पूरा हुआ'' जैसे नाम दिए हैं।

इस और एक अन्य पाठ में, मैं अपने मु य प्वायंटों के लिए पत्रों की सात बातें इस्तेमाल करता हूं।

तीन से पांच मु य प्वायंटों के लिए आप इससे सरल ढंग अपना सकते हैं। कई लेखक/वक्ता अभिवादन और विवरण को परिचय से सं मिलित करके पत्र के मु य भाग की रूपरेखा को छोड़ते हुए ताड़ना और प्रतिज्ञा को निष्कर्ष में मिलाते हैं। इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र की बीच की आयतों की रूपरेखा के दो उदाहरण इस प्रकार हैं: ''स्वीकृति'' ''आरोप'' और ''ताड़ना''[48] ''सराहना'' ''आलोचना'' और ''सलाह।''[49] ऐसी रूपरेखाओं में पहले भाग में आमतौर पर 2, 3 और 6 आयतों पर ध्यान रखा जाता है; दूसरा भाग आयत 4 को समझाता है और तीसरे भाग में आयत 5 के लिया जाता है।

''सात कलीसियाओं के नाम पत्र'' पर शृंखला में प्रकाशितवाक्य 2:1–7 का इस्तेमाल करने के अलावा विवाह में प्रेम फिर से जगाने पर संदेश के रूप में अकेले भी इस्तेमाल किया जा सकता है: ''क्या चिंगारी भड़काई जा सकती है?'' ऐसी प्रस्तुति के लिए वैवाहिक प्रेम और आत्मिक प्रेम में अंतर विस्तार से बताएं।

टिप्पणियां

[1]हमें ऐसा संकेत नहीं मिलता कि इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र अन्य पत्रों और प्रकाशितवाक्य के शेष पत्रों से अलग भेजा गया था। परन्तु इस पाठ के लिए हम यह मान लेते हैं कि केवल इफिसियों के नाम पत्र ही पढ़ा जा रहा है। [2]इन स्वर्गदूतों [दूतों] की पहचान की चर्चा इस पुस्तक में ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' पाठ में दी गई है। [3]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिण्डेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 58. यह भी स भव है कि इफिसुस को पहले स बोधित किया गया, क्योंकि यूहन्ना ने अपने कार्यों के लिए इस नगर को आधार बनाया था, जैसे पहले पौलुस ने बनाया था। [4]कई लेखक सामान्य रूप में इफिसुस का वर्णन और विशेषकर डायना के मन्दिर पर काफ़ी समय लगाते हैं (1) प्राचीन जगत में इफिसुस के महत्व के कारण और (2) उस नगर पर उपलब्ध

ढेर सी जानकारी के कारण। इफुसुस पर मेरी टिप्पणियां जान-बूझकर दो कारणों से संक्षिप्त रखी गई हैं: (1) क्योंकि अधिकतर बाइबल छात्रों को इफिसुस पर जानकारी प्रेरितों के काम, इफिसियों और 1 तीमुथियुस से मिल जाती है और (2) क्योंकि नगर की विशेषताएं पत्र पर बहुत कम प्रकाश डालती हैं। [5]इस एि फथियेटर को प्रेरितों 19:29, 31 में केवल ''रंगशाला'' कहा गया है। [6]यह खण्डहर तुर्की में सैल्कुक नगर के निकट है। [7]इफिसुस की स्थिति के लिए, ''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' वाला मानचित्र देखें। [8]मौरिस, 59. [9]सात तारों के अर्थ पर चर्चा के लिए, इस पुस्तक में पहले आया पाठ ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' पाठ देखें। निष्कर्ष यह निकला था कि तारे किसी न किसी तरह मण्डलियों को (और इसलिए उन मण्डलियों के सदस्यों को) दर्शाते थे। [10]कलीसिया का एकमात्र सिर यीशु है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18, 24).

[11]हमारे विपरीत यीशु को मालूम है कि किसी के अन्दर क्या है (यूहन्ना 2:24, 25); उद्देश्यों को जांचना उसी के बस की बात है। [12]''तेरे'' शब्द यहां एक वचन ''दूत'' आयत 1 से मेल खाते हुए एक वचन में ही हैं, जो *एक ही* मण्डली (इफिसुस वाली) को दर्शाता है। यूनानी शास्त्र में, एक वचन का इस्तेमाल पूरे पत्र में हुआ है। [13]''तेरे काम'' वाक्यांश भले और/या बुरे कामों को कहा गया हो सकता है। [14]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंटरोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकर हाउस 1979), 120. [15]इसका अर्थ ''धीरज से सहना'' है। [16]विलियम बार्कले, *लैटर्स टू द सेवन चर्चस* (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1957), 22. [17]2 तीमुथियुस 1:13, तीतुस 2:1 और अन्य पद ''खरी'' शिक्षा या डॉक्ट्रिन का संकेत देते हैं। इन पदों में ''खरा'' शब्द का अर्थ वही है, जो ''स्वस्थ तन'' वाक्यांश में स्वस्थ, तन्दुरुस्त, हट्टा-कट्टा का है। [18]काल को छोड़कर यूनानी और अंग्रेज़ी दोनों जगह शब्द एक ही हैं। [19]ये कथित ''प्रेरित'' प्रेरितों 1:21, 22 में दी गई योग्यताओं से भी परखे गए होंगे। कुछ लोग आज प्रेरित या प्रेरितों के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं; उन्हें भी इसी तरह परखा जाना चाहिए। [20]बिलाम के बारे में इस पुस्तक में पिरगमुन की कलीसिया के नाम पत्र का अध्ययन करने के समय और बताया जाएगा।

[21]अध्यात्मज्ञानियों की अफवाह दूसरी और तीसरी शताब्दियों में पूरी तरह से फैल गई, परन्तु इस फिलॉस्फी की आरंभिक बातें पहली शताब्दी के अन्त में पाई जाती थीं और पौलुस, यूहन्ना और अन्य मसीही लेखकों ने इनकी निंदा की थी। नॉस्टिक लोग वह ज्ञान होने का दावा करते थे, जो दूसरों को नहीं मिला था। [22]अर्ल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द क युनिकेटर'स कमैन्ट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 126. हिपोलुटिस कथित ''चर्च पितामहों'' में से था (अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा रहित मसीही लेखकों में जिनका आरंभिक कलीसिया में प्रभाव था)। [23]प्रेरितों 6 वाले सात पुरुष डीकन थे या नहीं, पर चर्चा के लिए डेविड रोपर की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग 2'' में ''अच्छे अगुओं की अत्यधिक आवश्यकता'' पाठ देखें। [24]उनकी गलती वास्तव में निकोलस से आई थी या नहीं, हम नहीं जानते। इससे कुछ पहले, परमेश्वर की प्रेरणा रहित लेखकों ने कहा था कि निकोलस सच्चाई से गिर गया था, परन्तु अधिकतर आरंभिक लेखक इससे इनकार करते थे। [25]हेली, 121. [26]''प्रेम'' शब्द का अनुवाद *agape* (नि:स्वार्थ, समर्पित प्रेम) से किया गया है। *अगापे* प्रेम मसीही गुणों में सबसे बड़ा है (1 कुरिन्थियों 13:13; कुलुस्सियों 3:14). [27]यूनानी शब्द का अनुवाद ''छोड़ दिया'' ''एक मज़बूत शब्द'' है; ''उन्होंने अपने पहले जोशीले प्रेम को बिल्कुल छोड़ दिया था'' (मौरिस, 60)। [28]सुझाव दिया गया है कि यीशु द्वारा इस मण्डली की सराहना और निंदा करने में कोई सम्बन्ध हो सकता है-कि उनका जोश कपटपूर्ण, न्याय करने वाले मन में बदल गया था। मुझे संदेह है कि ऐसा, हुआ होगा, क्योंकि यीशु ने उनके जोश की *सराहना* की, परन्तु यह सत्य है कि हमें सच्चाई के लिए अपने प्रेम की रखवाली करनी आवश्यक है, कहीं ऐसा न हो कि यह कपटी, दोष निकालने वाले मन में बदल जाए. [29]यह संकेत देते हुए कि अनुवादकों का विचार था कि यीशु ने अपने और परमेश्वर के प्रेम की बात की, या उसने दूसरे लोगों के लिए प्रेम की बात की (जिसमें साथी मसीही भी शामिल हैं) शब्द जोड़ दिए हैं. [30]प्रेरितों 19 से इफिसियों के परमेश्वर और मनुष्य जाति के लिए पहले प्रेम का कुछ पता चलता है। उन्होंने जादूगरी की पुस्तकें जला दी थीं और पूरे क्षेत्र में सुसमाचार पहुंचाने में सहायता की थी (आयतें 10,

18-20; देखें इफिसियों 1:15; 6:24).

[31]*द न्यू टैस्टामेंट इन माडर्न इंग्लिश,* सं. जे. बी. फिलिप्पस (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1958)। [32]''मसीह द्वारा उन्हें अपनी सच्ची कलीसिया नहीं माना जाएगा'' (जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन [द अपोकलिप्स],* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ [ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974], 11)। ''दीवट को हटाना'' की अन्य व्या याएं दी गई हैं, परन्तु ये संदर्भ से मेल खाती लगती हैं। आज हमारे प्रभु की कोई कलीसिया प्राचीन इफिसुस के प्रांगण में नहीं है। [33]रिचर्ड रोजर्स, ''लैटर्स टू द सेवन चर्चस, नं. 1,'' वीडियो सीरीज़ ऑन रैवलेशन 4 (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट एक्सटेंशन डिपार्टमेंट, 1990)। [34]यीशु एक ऐसी मण्डली को स बोधित कर रहा था, जिसे अस्तित्व में आए चालीस से अधिक वर्ष हो चुके थे; इस प्रकार उसकी ताड़ना उनके लिए थी जो कुछ समय पहले मसीही बने थे। यदि अधिकतर सुनने वाले नये मसीही थे, तो बल इस चेतावनी पर दिया जा सकता है कि पहले वाले जोश को बरकरार न रखने पर उनके साथ क्या हो *सकता* है। [35]अंग्रेज़ी में इस भाग में इस्तेमाल तीन R का इस्तेमाल कई लेखों में मिलता है; यह पता लगाना अस भव है कि इन्हें किसने आर भ किया। [36]वर्तमानकाल का इस्तेमाल किया गया है, सो इसका अनुवाद ''याद रख'' या ''सावधान रह'' हो सकता है। [37]मूल भाषा में यहां अनिश्चित भूतकाल का इस्तेमाल है, जो एक ही बार होने वाली घटना का संकेत हैं। मन फिराना पाप से टूट जाने के परिणामस्वरूप होना चाहिए। [38]*लिड्डल एण्ड स्कॉट 'स ग्रीक- इंग्लिश लैक्सिकन,* पच्चीसवां संस्क., संशो. व संक्षिप्त (लंदन: क्लेरडन प्रैस, 1892), s.v, ''*metanonia*.'' [39]कुछ लेखक तीसरे *R* के लिए ''रिटर्न'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। [40]आप अपने इलाके के हिसाब से लगाव को व्यक्त करने के ढंग इस्तेमाल कर सकते हैं। इन टिप्पणियों को अपनी परिस्थिति के अनुकूल इस्तेमाल करें।

[41]बच्चे घर पर होने पर मैं दोनों को हो सके तो प्रत्येक सप्ताह किसी रात अकेले रहने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। मैं उन्हें अकेले सप्ताहांत में बाहर जाने के लिए भी कहता हूं। [42]यह ताड़ना यीशु की पसन्दीदा थी। (उदाहरण के लिए, देखें मत्ती 11:15; 13:43; मरकुस 4:23; 14:35.) [43]''स्वर्गलोक'' शब्द फारसी से निकला माना जाता है, जो फारसी राजाओं और कुलीनों के बागानों या बगीचों के लिए हो सकता है। इस शब्द का अनुवाद सप्तति अनुवाद में अदन की वाटिका के लिए किया गया है। यहां यह स्वर्गीय अदन अर्थात परमेश्वर की उपस्थिति में मनुष्य की बहाली वाले संसार के लिए है। [44]प्रकाशितवाक्य में यह मु य शब्द है। इस पुस्तक में पहले आए ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए!'' पाठ का परिचय देखें। [45]रेअ समर्स, *वरदी इज द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैंन प्रैस, 1951), 112. [46]परमेश्वर हृदय का जानने वाला महान परमेश्वर है (यिर्मयाह 17:10; 1 राजा 8:39; 1 इतिहास 28:9; लूका 16:15)। हमारी प्रार्थना भजन संहिता 139:23, 24 में दाऊद की प्रार्थना की तरह होनी चाहिए। [47]याद करने, मन फिराने और दोहराने के लिए इसे व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाएं। मन फिराव में सुधारना (जहां तक मानवीय रूप से स भव हो) शामिल होता है। आपके कुछ सुनने वालों के लिए, यह कलीसिया के साथ स बन्ध सुधारना हो सकता है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो आप यह उल्लेख करें कि इस प्रस्तुति को गैर मसीहियों के बजाय मसीही लोगों के लिए अधिक दिया गया था। उन्हें जो मसीही नहीं हैं, प्रभु की आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए आप जोड़ सकते हैं, ''क्या आप उस जोश को नहीं पाना चाहेंगे, जिसकी हमने बात की कि मसीही व्यक्ति को मिल सकता है? तो फिर आप मरकुस 16:15, 16 वाली प्रभु की आज्ञा मानकर आज ही बपतिस्मा क्यों नहीं लेते?'' इस बात पर बल दें कि यह आज्ञापालन हृदय से होना चाहिए (रोमियों 6:3-6, 17, 18)। [48]जॉन रिस्से, ''इफिसुस: द रियल लूज़र,'' *द बुक ऑफ़ रैवलेशन सीरीज़,* अंक 1, ऑडियो टेप्स (अबिलेन, टैक्सस: सदर्न हिल्स चर्च ऑफ क्राइस्ट, 1991)। [49]जे लॉक हार्ट, ''द लैटर टू द चर्च एट इफिसुस,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (मार्च 1988): 6-9.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. आपको क्यों लगता है कि इफिसुस की कलीसिया को पहले स बोधित किया गया था?
2. इफिसुस नगर के बारे में आप क्या जानते हैं? बताएं कि इफिसुस में कलीसिया की स्थापना कैसे हुई और वह कैसे बढ़ी।
3. इस पत्र में यीशु के विवरण के स बन्ध में, उसके विषय में इफिसुस के मसीही लोगों को कौन सी दो बातों का स्पष्ट पता होना आवश्यक था?
4. कलीसियाओं में यीशु के चलते हुए, आपको क्या लगता है कि जिस मण्डली में आप जाते हैं, वह उसमें क्या देखता है? इससे भी महत्वपूर्ण, वह *आपके* हृदय में क्या देखता है?
5. यीशु ने इफिसुस की कलीसिया में सराहने योग्य क्या देखा? क्या ये गुण सभी कलीसियाओं में होने चाहिए?
6. नीकुलई कौन थे?
7. क्या आपको यह अजीब लगता है कि प्रभु ने किसी बात के लिए *घृणा* करने के लिए इफिसुस के मसीहियों की सराहना की? मसीही होने के नाते हमें किस बात से घृणा करनी चाहिए? *हमें* किस से घृणा नहीं करनी चाहिए?
8. इफिसुस की कलीसिया में ऐसा बहुत कुछ था, जो अच्छा था, इसके बावजूद इसका ''घातक दोष'' क्या था? यह समस्या ग भीर क्यों थी (और है)?
9. ''पहले प्रेम'' वाक्यांश पर चर्चा करें। विवाह में ''पहला प्रेम'' क्या है? मसीही जीवन में ''पहला प्रेम'' क्या है?
10. क्या विवाह या हमारे आत्मिक जीवनों में ''पहले प्रेम'' का जोश और उत्तेजना *अपने आप* बनी रहती है?
11. आपको क्या लगता है कि उन्हें चेतावनी देकर कि यदि वे मन नहीं फिराते, तो वह उनके दीवट को हटा देगा, यीशु क्या कहना चाहता था?
12. यीशु ने प्रेम की चिंगारी को फिर से जगाने के लिए कौन सा तीन तरफा उपचार बताया?
13. केवल ''प्रभु के लिए काम करना'' और ''पहले के समान काम करना'' में क्या अन्तर है?
14. इफिसुस में ''जय पाने वालों'' से की गई यीशु की प्रतिज्ञा पर चर्चा करें।
15. इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र को सब पत्रों में ''सबसे अधिक परेशान करने वालों में से'' एक क्यों कहा जाता है?